अमरत्व
शिक्षक सहायक पुस्तिका–7

पाठ 1. पंचवटी

- **पाठ उद्देश्य**–वनवास के समय पंचवटी में राम और सीता की रक्षा करते लक्ष्मण और प्रकृति के सौंदर्य से परिचित कराना।
- **पाठ सार**–सुंदर चंद्रमा की चंचल किरणें जल-थल में छाई हुई हैं। धरती और आकाश में चाँदनी चमक रही है। धरती पर नोकों वाली हरी घास बिछी हुई है। ऐसा लगता है धरती अपनी प्रसन्नता उनके माध्यम से प्रकट कर रही है। हवा मंद-मंद गति से चल रही है, जिससे वृक्ष झूम रहे हैं। पंचवटी की छाया में पत्तों से बनी एक कुटिया है। उस कुटिया के समक्ष एक स्वच्छ चट्टान पर धैर्यवान, वीर युवक निडर बैठा है। जब सारा संसार सो रहा है तब यह धनुर्धारी जाग रहा है। ऐसा लगता है भोगी कामदेव योगी का रूप धारण किए यहाँ बैठा है। यह व्रती वीर निद्रा को त्यागकर यहाँ कौन-सा व्रत कर रहा है? यह युवक राजसुख भोगने योग्य है। यह वन में आज वैरागी बना बैठा है। यह किसका प्रहरी बना हुआ है। उस कुटिया में कौन-सा धन है जिसकी रक्षा वह तन-मन जीवन से कर रहा है? मृत्यु लोक की अपवित्रता का अंत करने के लिए जो अपने पति के साथ आई है। तीनों लोंको की स्वामिनी लक्ष्मी ने आज इस कुटिया को अपना निवास बना लिया है। यह निर्जन प्रदेश है, अभी रात बची हुई है। यहाँ राक्षस घूम रहे हैं। वे कोई भी माया रच सकते हैं। वीरों के वंश का सम्मान, सीता जी यहाँ हैं। इसलिए उनकी रक्षा के लिए लक्ष्मण जैसे वीर का प्रहरी बनना आवश्यक है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) देखें पाठ सार।

   (ख) धनुषधारी लक्ष्मण जागकर पहरा दे रहे हैं, क्योंकि कुटिया में सीता सोई हुई हैं।

   (ग) कुटिया में तीनों लोंको की लक्ष्मी अर्थात् सीता जी हैं।

   (घ) ऐसा लगता है सुंदर कामदेव योगी का रूप धारण किए बैठे हैं।

2. (क) धरती अपनी प्रसन्नता हरी-भरी नोकीली घास के माध्यम से प्रकट करती है।

   (ख) कुटिया में सीता हैं। लक्ष्मण उनकी रक्षा प्रहरी के रूप में जागकर कर रहे हैं।

   (ग) चंद्रमा की किरणें जल, थल और आकाश में फैली हुई हैं।

3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
   (घ) ✓ (ङ) ✗

4. पाठ सार देखें

5. (क) शशि, चाँद, निशापति (ख) भूमि, धरा, पृथ्वी
   (ग) वृक्ष, तरु, तरुवर (घ) जग, विश्व, दुनिया
   (ङ) वन, जंगल, कानन।

6. (क) चंद्र-चाँद (ख) जल-पानी
   (ग) थल-धरती (घ) अंबर-आकाश
   (ङ) पर्ण-पत्ता।

7. कुसुम + आयुध सन् + मुख
   दृष्टि + गत मर्त्य + लोक।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। श्री राम ने अपने जीवन में मर्यादा पालन किया है। वे सभी रूपों में आदर्श हैं। उन्होंने नैतिकता का पालन किया है। वे आज भी सबके आदर्श हैं।

(ख) यह कथन लक्ष्मण के लिए प्रयुक्त हुआ है। लक्ष्मण ने अपना संपूर्ण जीवन बड़े भाई की सेवा में बिताया था। वर्तमान युग में लक्ष्मण-सा भाई होना कठिन है।

पाठ 2. हम दीवानों की क्या हस्ती

- **पाठ उद्देश्य**–व्यक्ति को श्रेष्ठ कार्य करके स्वतंत्र जीवन जीना चाहिए, इस भाव से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–हम दीवानों का क्या है, आज यहाँ हैं तो कल कहीं ओर चले जाएँगे। हम मस्त होकर बढ़ते जाते हैं। जहाँ भी जाते हैं मस्तियाँ हमारे साथ चलती हैं। हम कभी उत्साहित होकर आते हैं, कभी दुखी होकर आँसुओं के रूप में बहते हैं। सब कहते ही रह जाते हैं कि तुम अभी आए थे और अभी क्यों चल दिए? हम किस ओर जाएँगे, यह मत पूछो। हमने चलना है इसलिए चलते जा रहे हैं। इस संसार से कुछ कह दिया और किसी से कुछ सुन लिया। कभी हँसे तो कभी रोए। हमने सुख-दुख दोनों को एक ही भाव से स्वीकार किया। यह संसार भिखारियों का है। सब माँगते रहते हैं। हमने किसी से कुछ नहीं लिया अपितु लोगों को खुले मन से प्रेम लुटाते चले गए। इतना होने पर भी हमारे मन में पीड़ा का एक भाव रहा कि हम असफल रहे। अब इस संसार में कौन अपना है और कौन पराया है? हम तो जा रहे हैं। जो यहाँ रह रहे हैं वे सुखी रहें। हम इस संसार से स्वयं बँधे थे। अब उस बंधन को तोड़ रहे हैं।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) दीवाने के रूप में।

   (ख) किसी के आगमन पर प्रसन्नता होती है और जाने पर दुख होता है। कवि ने इस भाव को प्रकट किया है।

   (ग) मनमौजी व्यक्ति सबको प्रेम देता है।

   (घ) कवि को बहुत अधिक सुख और बहुत अधिक दुखों का सामना करना पड़ा था।

2. (क) कवि अन्य लोगों के समान उपलब्धियाँ न पा सका, उसे लगता है कि वह व्यावहारिक जीवन में असफल रहा।

   (ख) दीवानों स्वयं ही सांसारिक बंधन में बँधा था। अब उसने उस बंधन को तोड़ डाला है।

   (ग) दीवाने अपना जीवन मस्ती में बिताते हैं। साधारण लोग चिंतित रहते हैं।

3. (क) और (ख) पाठ सार देखें।

4. व्यक्ति के भीतर अंतर्द्वंद्व चलता रहता है। दीवाने की भी यही स्थिति है। वह एक ओर स्वच्छंद प्रेम करने की बात करता है तो दूसरी ओर असफलताएँ उसे कचोटती भी हैं। कवि ने इस स्थिति का चित्रण किया है।

5. (क) प्रेम (ख) असफलताओं का भार

   (ग) सबको समान भाव से देखते हैं।

   (घ) बंधनहीन (ङ) उल्लासपूर्ण।

6. (क) प्रसन्नता, खुशी (ख) संसार, विश्व

   (ग) प्रेम, स्नेह (घ) मन, दिल

   (ङ) कष्ट, पीड़ा।

7. (क) उड़ाते कहाँ चले (ख) जग को अपना

(ग) ले असफलता।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) मस्ती के अनेक रूप हैं। इस कविता में मस्त रहना सकारात्मक है। सांसारिक छल-कपट से अलग रहने की अपनी आनंददायक मस्ती होती है। मस्ती का दूसरा रूप अनुशासनहीनता का है जो हानिकारक होता है।

(ख) दीवाने भ्रमण करते रहते हैं। उनका किसी एक स्थान से लगाव नहीं होता इसलिए उनका जीवन अन्य लोगों से भिन्न होता है।

पाठ 3. छोटा जादूगर

- **पाठ उद्देश्य**–उत्तरदायित्व बालक को प्रौढ़ बना देते हैं, इससे अवगत कराना।
- **पाठ सार**–कार्निवाल के मैदान में एक लड़का उदास बैठा था। लेखक के पूछने पर उसने बताया कि कार्निवाल में क्या-क्या होता है। वहाँ के जादूगर से अच्छा खेल वह दिखा सकता है। लेखक उसे कार्निवाल में ले जाने लगा। उसे शरबत पिलाकर उसके परिवार के बारे में पूछा। उसने बताया कि उसके पिता देश के लिए जेल गए हैं, बीमार माँ की देखभाल के लिए वह तमाशा दिखाकर पैसे कमाता है। लेखक उसे कार्निवाल ले जाता है। वह निशाने लगाकर बारह खिलौने जीत जाता है।

  बहुत दिनों के बाद छोटा जादूगर उसके पास आता है। लेखक की पत्नी उसे खेल दिखाने के लिए कहती है। वह उसे एक रुपया देती है। कुछ समय पश्चात् लेखक मोटर से जा रहा था, उसे छोटा जादूगर दिखाई दिया। उसने बताया कि उसकी माँ को अस्पताल वालों ने निकाल दिया था। उसकी माँ चिथड़ों में लिपटी पड़ी थी।

कुछ दिनों के पश्चात् लेखक को छोटा जादूगर तमाशा दिखाते मिला। उसका मन उदास था। तमाशे से मिले पैसे लेकर वह जाने लगा। लेखक के पूछने पर उसने बताया कि माँ ने जल्दी आने के लिए कहा था, उसका अंत निकट था। लेखक उसे मोटर से उसके झोंपड़े तक लाया छोटा। जादूगर माँ से लिपट गया। उसकी माँ की मृत्यु हो गई।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) वह उम्र में छोटा था पर तमाशे दिखाता था। सब उसे छोटा जादूगर कहने लगे थे।
   (ख) उसके पास टिकट के पैसे नहीं थे।
   (ग) बारह खिलौनों पर।
   (घ) देश को स्वतंत्र कराने के आंदोलन में भाग लेने के कारण।
2. (क) लेखक ने छोटा जादूगर की माँ को चीथड़ों में लिपटा और काँपते हुए देखा।
   (ख) उसकी माँ का अंतिम समय आ गया था, इसलिए उसका खेल नहीं जमा था।
   (ग) छोटा जादूगर माँ से लिपटकर रो रहा था, उसकी माँ मर चुकी थी। यह देखकर लेखक स्तब्ध रह गया।
3. (क) शांत (ख) चतुर
   (ग) कुद्ध (घ) लता-कुंज
   (ङ) चेष्टा।
4. (क) माँ ने (ख) जयशंकर प्रसाद
   (ग) खिलौनों पर (घ) लाल
   (ङ) कार्निवाल के कारण।

5. (ख) दूध (ग) नाच
(घ) रात (ङ) शाम।

6. तिरस्कार–उपेक्षा समग्र–पूरा
स्वीकार–मंजूर पथ–रास्ता
निकेतन–आवास कारावास–बंदी गृह।

7. (क) लेखक ने छोटा जादूगर से कहा।
(ख) छोटा जादूगर ने लेखक से कहा।
(ग) छोटा जादूगर ने लेखक से कहा।
(घ) लेखक की पत्नी ने छोटा जादूगर से कहा।
(ङ) लेखक ने छोटा जादूगर से कहा।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) छोटा जादूगर निर्धन बालक था। यदि मैं भी उसी स्थिति में होता तो ऐसा ही कुछ करके माँ की देखभाल करता।

(ख) छोटा जादूगर श्रमिक नहीं था। वह अपने करतब दिखाकर पैसे कमा रहा था। वह उचित कर रहा था।

पाठ 4. पूस की रात

◆ **पाठ उद्देश्य**–निर्धन किसान की दयनीय स्थिति से अवगत कराना।

◆ **पाठ सार**–हल्कू ने सहना से रुपए उधार लिए थे। सहना रुपए लेने आया तो हल्कू ने कंबल के लिए रखे रुपए देने के लिए कहा। उसकी पत्नी ने बहुत कठिनाई से रुपए दे दिए। पूस की ठंडी रात में हल्कू खेत में अपने कुत्ते के साथ लेटा उससे बातें कर रहा था। वह ठंड भगाने के उपाय कर रहा था। अंत में कुत्ते को अपने पास लिटा लिया। हल्कू खेत में पड़े पत्ते बटोर लाया और

अलाव जला लिया। वह कुत्ते जब्बर के साथ रात भर बातें करता रहा। खेत में नीलगायों का झुंड घुस आया था। जबरा उनके पीछे भागा। हल्कू उन्हें भगाने चला परंतु भयंकर ठंड के कारण वह वहीं अलाव के पास बैठ गया। उसकी पत्नी मुन्नी सुबह-सुबह आई और उसे जगाया। उसने बताया कि नीलगाय खेत उजाड़ गई हैं। हल्कू ने बहाना बनाया कि उसके पेट में दर्द हो गया था। उसकी जान बच गई। मुन्नी ने कहा कि अब मज़दूरी करके गुज़ारा करना पड़ेगा। हल्कू खुश था कि ठंड में खेत की रखवाली तो नहीं करनी पड़ेगी।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) सहना हल्कू से उधार दिए रुपए लेने आया था।
   (ख) मुन्नी ने कंबल खरीदने के लिए रुपए संभाल रखे थे।
   (ग) हल्कू ने पत्ते इकट्ठे करके अलाव जलाकर ठंड से बचने का प्रबंध किया था।
   (घ) हल्कू इसलिए खुश था कि उसे ठंडी रात में खेत की रखवाली नहीं करनी पड़ेगी।

2. (क) खेत में काम करना, फसल उगाना, उसकी रक्षा करना खेती करना होता है। मज़दूरी किसी भी तरह की हो सकती है। खेती से पैसे नहीं बचते थे इसलिए मुन्नी ने मज़दूरी करके पैसे कमाने के लिए कहा था।
   (ख) ठंड से बचने के अंतिम उपाय के रूप में हल्कू ने अपने कुत्ते को अपने साथ सुला लिया ताकि उसके शरीर की गर्मी से उसे ठंड नहीं लगेगी। उस स्थिति को लेकर लेखक ने कहा है कि कुत्ते की मित्रता से उसकी आत्मा प्रकाश से चमकने जैसी हो गई थी।
   (ग) संकट की स्थिति में हल्कू के लिए जबरा ही उसका

एकमात्र सहारा था। ठंड से काँपते हुए वह अपनी सारी पीड़ाएँ जबरा के साथ बाँट रहा था। इसलिए इसे अनोखी मित्रता कहा गया है।

3. (क) हल्कू ने मुन्नी से कहा।
   (ख) मुन्नी ने हल्कू से कहा।
   (ग) मुन्नी ने हल्कू से कहा।
   (घ) हल्कू ने मुन्नी से कहा।
4. (क) कंबल के लिए (ख) एक कुत्ता
   (ग) तीन (घ) आठ
   (ङ) अरहर के।
5. (क) हल्कू ने चादर ओढ़ ली।
   (ख) हल्कू ने अलाव जलाया।
   (ग) कुत्ते की पूँछ हिल रही थी।
   (घ) **स्त्रीलिंग**–हल्कू ने दोहर बगल में दबा ली।
   (ङ) **पुल्लिंग**–हल्कू को मुन्नी पर गर्व हुआ।
6. हल्कू ने बहुत परिश्रम करके कंबल खरीदने के लिए तीन रुपए जमा किए थे। सहना को रुपए देते समय उसे लगा मानो वह अपने प्राण निकालकर दे रहा था।
7. आजकल के किसानों को बीज खरीदने, सिंचाई के लिए पानी का प्रबंध करने, खाद खरीदने, बिजली संकट, फसल बेचने आदि की परेशानियों से जूझना पड़ता है।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) हल्कू किसान था। वह खेती से पर्याप्त धन नहीं कमा पाता था। उसे उधार लेना पड़ता था। यह भारतीय किसान

की दयनीय स्थिति है। वह खेती छोड़कर मज़दूरी करने को विवश हो जाता है। यह कहानी इस स्थिति की ओर संकेत करती है।

(ख) सर्दियों की ठंडी रात में हवा चलने से ठंड और बढ़ जाती है। इसलिए पवन को निर्दयी कहा गया है। पवन के चलने से पत्तियाँ उड़कर आवाज़ करती हैं। इसे पत्तियों का कुचलना कहा गया है।

पाठ 5. सत्कर्तव्य

पाठ उद्देश्य–अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत कराना।

पाठ सार–संसार में जितने भी जीव और निर्जीव हैं सब अपने-अपने कार्यों में लगे हुए हैं। सब अपनी-अपनी धुन में लगे हैं। सबके अपने संकल्प हैं। पेड़ जीवन भर स्वयं धूप सहते हैं और धरती पर छाँव करते हैं। छोटा-सा पत्ता भी अपने कार्यों में तत्पर रहता है। सूर्य संसार को प्रकाशमान करता है। चंद्रमा चाँदनी रूपी अमृत बरसाता है। सब अपने-अपने कार्यों में संलग्न हैं। कोई भी ऐसा नहीं है जो बिना काम किए दिखाई देता है। छोटे से तिनके का भी अपना उद्देश्य होता है। उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वह अपने कर्मशील शरीर का अंत कर लेता है। तुम मनुष्य हो। तुम्हारे पास असीमित बल है और बुद्धि से सुशोभित हो, परिपूर्ण हो। क्या तुमने विचार किया है कि इस संसार में जीने का तुम्हारा कोई उद्देश्य है? बुरा मत मानना परंतु एक बार अपने मन में सोचना अवश्य कि क्या तुमने अपने जीवन के समस्त कर्तव्य पूरे कर लिए हैं? तुम केवल अपने लिए सोचते हो, अपने आंनद के लिए जीते हो, खाते-पीते-सोते हो, हँसते हो, सुख प्राप्त करते हो। इस संसार से निर्लिप्त अपने स्वार्थों की पूर्ति करना ही तुम्हारा ध्येय है। तुम स्वयं सोचो कि इस संसार में कौन-सा जीव-निर्जीव है जो तुम्हारी तरफ़ अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए मजबूर है? जिस देश

और समाज ने तुम्हें जन्म देकर पाल-पोसकर बड़ा किया है, उसे तुमसे बहुत अपेक्षाएँ हैं। उसे अपना कल्याण करने का तुम पर भरोसा है। तुम्हारा सर्वप्रथम सबसे श्रेष्ठ कर्तव्य देश और समाज से उऋण होना है। क्या तुम अपना शेष जीवन इस धरती को प्रदान कर सकते हो?

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) पत्ते वायुमंडल से कार्बनडायोक्साइड लेकर ऑक्सीजन देते हैं। यह ऑक्सीजन जीवों की प्राण वायु है। इस तरह पत्ते अपना कर्म निभाते हैं।

   (ख) कवि कहता है कि सोचो इस चर-अचर संसार में तुम्हारे जैसा क्या कोई और स्वाथी है?

   (ग) कवि कहता है कि संसार के समस्त चर-अचर कर्म में लगे हुए हैं।

2. (क) सूर्य अपने प्रकाश को सुशोभित, प्रकाशमय करता है।

   (ख) चंद्रमा अपनी चाँदनी से धरती पर अमृत बरसाता है।

   (ग) सच्चा कर्तव्य बलिदान और त्याग होता है। देश प्रेम के लिए स्वयं को बलिदान करना चाहिए। देश के लिए सब कुछ त्याग देना चाहिए।

   (घ) कवि ने संदेश दिया है, मनुष्य को स्वार्थी होकर केवल अपने लिए ही नहीं सोचना चाहिए। उसे देश के लिए, समाज हित के लिए भी कार्य करने चाहिएँ।

3. देखें पाठ सार।

4. (क) सुधा (ख) प्रतिज्ञा

   (ग) रामनरेश त्रिपाठी (घ) सोचता है।

5. बिलसित जन्म तुम्हारा, क्या उद्देश्य-रहित हो जग में, तुम अपने मन में, क्या कर्तव्य समाप्त कर लिया।

6. (क) सुधा, पीयूष (ख) चंद्र, शशि
(ग) पृथ्वी, वसुधा (घ) दिनकर,सूर्य।

7. (क) अनिश्चित (ख) उच्च
(ग) सक्रिय (घ) गुरु
(ङ) दुख।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) मनुष्य जिस देश में जन्म लेता है उसके प्रति मन में प्रेम होता है। यह प्रेम स्वाभाविक होता है। यह स्वत: होता है। सैनिक देश की रक्षा के लिए प्राण तक न्यौछावर क्यों करता है? क्योंकि वह अपनी मातृभूमि से प्रेम करता है।

(ख) विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

पाठ 6. दशमेश पिता गुरु गोविंद सिंह

◆ **पाठ उद्देश्य**–सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह साहब के जीवन और कार्यों से अवगत कराना।

◆ **पाठ सार**–सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर 1666 को गुरु तेग बहादुर साहब और माता गुजरी जी के यहाँ पटना में हुआ था। उनमें शक्ति और भक्ति थी। वे आजीवन निर्धनों और शोषितों की भलाई के लिए संघर्षरत रहे। उनके पिता गुरु तेग बहादुर जी के पास कश्मीरी पंडित आए जिन्हें बलपूर्वक मुसलमान बनाया जा रहा था। मुगल शासक औरगंजेब ने शर्त रखी कि यदि कोई महापुरुष इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इन्कार करके अपना बलिदान करता है तो वह कश्मीरी पंडितों को छोड़ देगा। नौ वर्षीय गुरु गोविंद सिंह ने अपने पिता से कहा कि आप ही यह बलिदान कर सकते हैं। गुरु तेग बहादुर जी ने 24 नवंबर 1675

को अपना बलिदान दे दिया। उसी दिन गुरु गोविंद सिंह जी सिखों के दसवें गुरु बने। उन्होंने गुरुग्रंथ साहब को भी पूरा किया। सन् 1699 में उन्होंने खालसा पंथ स्थापित किया। उन्होंने खालसा के लिए केश, कंघा, कड़ा, कृपाण और कचेरा अनिवार्य किया। वे कवि, भक्त तो थे ही संगीत और साहित्य में भी रुचि रखते थे। उन्होंने मुगलों के विरुद्ध 14 युद्ध लड़े। उनके चार साहिबज़ादे थे। अत्याचारी औरगंज़ेब ने ज़ोरावर सिंह और फतेह सिंह को ज़िंदा दीवार में चुनवा दिया। अजीत सिंह और जुझार सिंह युद्ध में शहीद हुए। उनकी पत्नी को भी शहीद कर दिया गया। औरगंज़ेब की मृत्यु के पश्चात् बहादुरशाह गद्दी पर बैठा। वह गुरु गोविंद सिंह जी का आदर करता था। यह देखकर वजीर खान नामक शासक ने धोखे से गुरु गोविंद सिंह जी की हत्या कर दी। वे बलिदान हो गए।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) गुरु गोविंद सिंह जी सिखों के दसवें गुरु थे।
   (ख) उन्हें बलपूर्वक मुसलमान बनाया जा रहा था। वे गुरु तेग बहादुर जी के पास अपनी रक्षा के लिए आए थे।
   (ग) उस बालक ने अपने पिता गुरु तेग बहादुर को अपना बलिदान करने के लिए कहा।
   (घ) खालसा वह है जिसने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर काबू पा लिया है। जो केश, कंघा, कृपाण, कड़ा और कचेरा धारण करता है।
2. (क) उनका जन्म 22 दिसंबर 1666 को पिता गुरु तेगबहादुर जी और माता गुजरी के यहाँ पटना में हुआ।
   (ख) उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए औरंगज़ेब से 14 युद्ध लड़े। उन्होंने अपने पुत्रों और पत्नी के बलिदानों का दुख देखना पड़ा, वे विचलित न होकर धर्म की रक्षा करते रहे।

(ग) औरगंजेब ने शर्त रखी थी कि यदि कोई महापुरुष इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इन्कार करके अपना बलिदान कर दे तो वह कश्मीरी पंडितों का धर्म परिवर्तन नहीं कराएगा।

3. (क) कश्मीरी पंडितों ने गुरु तेग बहादुर से कहा।
   (ख) गुरु गोविंद सिंह ने गुरु तेग बहादुर जी से कहा।
   (ग) गुरु गोविंद सिंह जी ने अनुयायी से कहा।

4. प्रसिद्धि–अप्रसिद्धि, गरीब–अमीर, उत्थान–पतन, रक्षक–भक्षक, धर्म–अधर्म, पवित्र–अपवित्र।

5. (क) गुरु गोविंद सिंह जी (ख) ओजस्वी
   (ग) 14 युद्ध (घ) अजीत सिंह, फतेह सिंह
   (ङ) 1707 ई।

6. (क) कुर्बानी, शहादत (ख) ख्याति, यक्ष
   (ग) पक्षी, विहंग (घ) जग, संसार
   (ङ) रास्ता, मार्ग।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) गुरु ग्रंथ साहिब में विभिन्न धर्मों को मानने वाले संत कवियों की रचनाएँ संकलित की गई हैं। यह ग्रंथ केवल धार्मिक ग्रंथ ही नहीं है, अपितु मनुष्यों को प्रेम का संदेश देकर एक सूत्र में बाँधने वाला ग्रंथ है।

(ख) गुरु गोविंद सिंह मानते थे कि अत्याचारी औरगंज़ेब के सैनिक चिड़ियों जैसे हैं जिनसे अपने बाज़ों के समान अपने वीर योद्धाओं से लड़ाकर मार देंगे। जिनके मन में गीदड़ों जैसा भय है वे उन्हें शेर के समान वीर बना देंगे।

पाठ 7. तिरंगा

- **पाठ उद्देश्य**–देश प्रेम और तिरंगे के महत्व से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–हे मौला, आप मुझे दौलत, शोहरत और जन्नत भेंट न करें। मुझे दान दें कि जब वतन की शमा पर पतंगा कुर्बान हो तो उसके होंठों पर गंगा का नाम हो और हाथों में तिरंगा हो। कवि देश पर सैनिकों के बलिदान के संदर्भ में यह चाहता है। सैनिक कहते हैं कि हम बर्फ़ीली हवाओं में एक ही सदा सुनें, तपते सहराओं में हमारे मन से एक ही दुआ निकले कि हम जीते हुए देश का मान रखें और मर जाने पर हमारी मर्यादा को याद रखा जाए। हम जीवित रहें या न रहें मगर देश की खुशहाली, सज-धज सदा बनी रहे। लोगों के मन में देश प्रेम की तरंगे लहराती रहें। हम गीता के ज्ञान को सुनें या न सुनें परंतु देश के गुणगान को अवश्य सुनें। हम सबद और कीर्तन चाहे न सुनें परंतु भारत माता का जयगान अवश्य सुनें। परवरदीगार मैं तुम्हारे द्वार पर यह पुकार लेकर आया हूँ कि चाहे मेरे कान में अज़ान की आवाज़ न आए पर हिंदुस्तान की जय की आवाज़ ज़रूर आए।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) कवि कहता है कि जब सैनिक वतन पर कुर्बान हो तो उसके होंठों पर गंगा का नाम हो और हाथों में तिरंगा हो।
   (ख) कवि कहता है कि जलते-तपते सहराओं में सैनिक दुआ माँगते हैं कि वे जीते हुए देश का मान रखें। हमारे मरने पर देश के लिए की गई कुर्बानियाँ याद रहें।
   (ग) इस पंक्ति का अर्थ है कि लोगों के मन में देश प्रेम की तरगें लहराती रहें।
   (घ) कवि के अनुसार गीता और सबद-कीर्तन से ज़्यादा ज़रूरी है देश का गुणगान और भारत का जयगान सुनना।

2. (क) पतंगा वीर का प्रतीक है जो देश की रक्षा करते हुए शमा रूपी युद्ध में कुर्बान हो जाता है।

(ख) कवि देश प्रेम के यशगान को गीता के ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण मानता है।

(ग) कवि परवरदिगार से कहता है कि वह अज़ान चाहे न सुने हिंदुस्तान की जय अवश्य सुने।

(घ) इस धरती का यशगान, सबद-कीर्तन सुन ना सकें, सुनें कान पर जय-जय हिंदुस्तान सुनें, जलधि तरंगा हो, होठों पर गंगा हो।

3. दौलत–धन, ऐश्वर्य, मौला, ईश्वर, देवता, स्वामी,

शोहरत–प्रसिद्धि तिरंगा–तीन रंग वाला ध्वज

जलधि–सागर

4. पंतगा–तिरंगा हवाओं–सहराओं

याद रहें–आबाद रहें यशगान–जयगान

तंरगा–तिरंगा।

5. परवरदिगार, मौला, दौलत, शोहरत, जन्नत।

6. (क) धन–ऐश्वर्य (ख) शोहरत–यश, प्रसिद्धि

(ग) पंतगा–कीट, परवाना (घ) सुरसरि–जाह्नवी

(ङ) सागर–समुद्र।

मूल्याधारित प्रश्न

(क) देशभक्ति का अर्थ है जिस तरह भगवान के प्रति भक्ति का भाव होता है वैसा ही भाव, वैसी ही श्रद्धा देश के लिए होनी चाहिए। इसके लिए देश से प्रेम करना और उसके कल्याण के लिए सदा कार्य करना चाहिए।

(ख) देशभक्ति नि:स्वार्थ होती है। इसके लिए सर्वस्व अर्पण करना चाहिए। देश है तो हम हैं। इसलिए बिना किसी स्वार्थ के इसकी सेवा करनी चाहिए। यही निष्काम सेवा है।

पाठ 8. सफलता का सूत्र

- **पाठ उद्देश्य**–सफलता प्राप्त करने के लिए योग्यता आवश्यक होती है, इसे समझाना।
- **पाठ सार**–विश्व में कुछ लोगों की ही पहचान बनती है, बाकियों की नहीं। 2 अक्टूबर गाँधी-शास्त्री जयंती के रूप में मनाया जाता है। अपनी पहचान बनाने के लिए किशोर और बच्चे सोचते हैं कि शरीर के कारण पहचान बना लेंगे। कुछ सोचते हैं कि वे गायन, नृत्य आदि प्रतिभा के कारण जाने जाएँगे। कुछ शैक्षिक कुशलता को पहचान का माध्यम समझते हैं। किशोरावस्था जीवन की सफलता को मोड़ है। ईमानदारी, मेहनत, लगन, समर्पण से किए कार्यों से फल मिलता है। भाग्य की भी भूमिका होती है। अंतत: सफलता मेहनत, लगन और परिश्रम से ही प्राप्त होती है। सफलता प्राप्ति के लिए योग्य होना आवश्यक है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) महात्मा गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री के जन्म-दिन के कारण 2 अक्टूबर खास दिन है।
   (ख) किशोर शारीरिक व्यायाम, नृत्य, गायन आदि क्षेत्रों में कार्य करके पहचान बनाने का प्रयत्न करते हैं।
   (ग) इसके लिए किशोरावस्था सबसे महत्वपूर्ण होती है।
   (घ) सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत, लगन और समर्पण मुख्य तत्व हैं।

2. (क) सफल होने के लिए मेहनत, लगन और समर्पण आवश्यक होते हैं।

(ख) इतिहास के पृष्ठों में वही नाम करते हैं, जो विशेष कार्य करते हैं और अपने लक्ष्य को परिश्रम, लगन और समर्पण भाव से प्राप्त करते हैं।

(ग) अपने लक्षय को प्राप्त करने लिए निरंतर कार्यरत रहना पड़ता है, परिश्रम करना पड़ता है। एक ही दिन में लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता।

3. (क) हाँ (ख) हाँ

(ग) ना (घ) हाँ।

4. (क) लाखों (ख) पढ़ाई, कुशलता

(ग) देहयष्टि, व्यायाम (घ) मेहनत, लगन, समर्पण।

(ङ) दुर्लभ।

5. श्रम करने में शरीर को कष्ट देना पड़ता है। आलसी व्यक्ति श्रम नहीं करना चाहते। आलसी व्यक्ति आराम पंसद होते हैं। यह कथन ययार्थ को प्रकट करता है।

6. **उपसर्ग से बने शब्द**–अनुकूल, दुर्लभ, सद्‌गुण, प्रतिदिन।

प्रत्यय से बने शब्द–प्रचुरता, सफलता, ईश्वरीय, प्रभावित, महत्वपूर्ण, मेहनती, समग्रता।

7. (क) पहचान के लिए योग्यता आवश्यक होती है।

(ख) परिश्रम से सफलता मिलती है।

(ग) मेहनत करके आगे बढ़ें।

(घ) लक्ष्य पाने के लिए तत्पर कार्यशील बनें।

(ङ) समर्पण भाव से कार्य करना चाहिए।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) अधिकांश लोग परिश्रम के समक्ष आराम को महत्व देते हैं। वे आराम करने की मनोवृति पर नियंत्रण नहीं कर पाते और असफल हो जाते हैं।

(ख) यह सत्य है कि बिना परिश्रम किए फल नहीं मिलता। सफलता पाने के लिए लगन और समर्पण का भी उतना ही महत्व होता है जितना परिश्रम का। इसलिए फल पाने के लिए मेहनत, लगन और समर्पण आवश्यक होते हैं।

पाठ 9. ग्राम देवता

- **पाठ उद्देश्य**–किसानों की दयनीय स्थिति और उनके महत्व से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–हे किसान रूपी ग्राम देवता तुम्हें नमस्कार! तुमने सोने-चाँदी से नहीं बल्कि मिट्टी से प्यार किया है। लोगों के शोर से दूर तुम अकेले छोटे से स्थान पर रहते हो। वहाँ सूर्य और चंद्रमा का नहीं प्राणों का अर्थात् आत्मबल का प्रकाश होता है। तुम भ्रम के वैभव से जड़ में भी चेतना भर देते हो। फसलों के दाने-दाने में सौ-सौ हरे भरे दाने खिला देते हो। परिश्रम करके पसीने बहते हैं, यह पसीने नहीं गंगा की उज्ज्वल धारा हैं। परिश्रम करने वाले किसानों के अंगों पर वस्त्र नहीं हैं। उनके शरीर केवल हड्डियों के ढाँचे हैं। इन हड्डियों में वह दधीचि की कठोर हड्डी है जो इंद्र के वज्र के समान प्रचंड शक्ति से भरी है। हे किसान, तुम अपने परिश्रम से संसार को अन्न प्रदान करते हो। स्वयं निर्धनता के शाप को दंड के समान भोगते हो। तुम झोंपड़ी में रहते हो। परंतु राजमहलों को सजा देते हो। तुम सूखे खेतों में पानी देने के लिए वर्षा की प्रतीक्षा करते हो! वर्षा न होने के कारण

धरती भीग नहीं पाती। तुम अपने आँसुओं से धरती को सींचते हो। तुम लोगों को अन्न प्रदान करते हो।

परंतु तुम्हें केवल चार दाने प्रसाद के रूप में मिलते हैं। किसानों के लिए कीचड़ नारी शक्ति के समान है जिसके अंग-अंग से संगीत निकलता है। कीचड़ खेतों की मिट्टी को कहा गया है। इसमें साहस की आग भरी हुई है। हे कवियो, तुम कुसुम, केसर, पराग की उपमाओं को भूल जाओ। यह धरती जननी है जिसके गायन से मृत अंकुर भी जीवित हो जाते हैं। इसने दुखों को भी सुख पूर्वक झेला है। ये किसान मिट्टी से सने राम-श्याम के मटमैले बाल्यकाल हैं। जो प्रसन्नता से खिलखिला रहे हैं। ये मुन्ना, हरे कृष्ण, मंगल, मुरली, बच्चू, विठूब इनको चिंता नहीं होती। धरती की हरी दूब ठंड, गर्मी, वर्षा सबको सह जाती है। ये किसान दूब के समान सब सह जाते हैं। ये किसान बुरे दिनों के प्रहारों को सहने के लिए तैयार रहते हैं। किसान लोगों के मन पर राज करने वाले शासक के समान हैं। यदि वे खिलखिलाते हैं तो पूरा देश फलता-फूलता है। किसानो आओ, सिंहासन पर बैठो यह तुम्हारा अमिट राज्य है। उपजाऊ भूमि के खेत नई फसल के वेश में सज गए हैं। कवि किसानों को संबोधित करता है कि तुम धरती पर रहकर इस धरती का भार सहन करते हो। मैं अपनी कविता से तुम्हारी पावन आरती उतारता हूँ।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) वे खेतों में बीजारोपण करते हैं। जड़ बीजों में से अंकुर फूट पड़ते हैं। इस प्रकार किसान जड़ में चेतन को विकसित कर देते हैं।

   (ख) बारिश नहीं होती तो किसान दुखी हो जाते हैं। वह आँखों के आँसुओं से ही खेतों को सीचतें हैं।

(ग) कवि कहता है कि ये उपमाएँ बेकार हो गई हैं। किसानों के संघर्ष को अभिव्यक्त करने वाली नई उपमाओं को खोजना पड़ेगा।

(घ) मटमैले शिशु मिटटी से जुड़े किसानों के प्रतीक हैं। मिट्टी में खेलते शिशु बड़े होकर नई उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करने में किसान समर्थ होते हैं।

(ङ) वास्तव में किसानों को सिंहासन पर बैठना चाहिए क्योंकि वे अन्न दाता हैं। लोगों का भरण-पोषण करते हैं। शासक भी यही करते हैं। इसलिए कवि ने किसानों के सिंहासन पर आसीन होने के लिए कहा है।

2. (क) कवि किसानों को सिंहासन पर बिठाना चाहता है।

(ख) यदि किसान खुशहाल होंगे तो देश भी खुशहाल होगा। जैसे शासक प्रसन्न होता है तो देश भी फलता-फूलता है।

(ग) ग्राम देवता को अपने प्राण रूपी आत्मविश्वास का फल मिलता है।

3. (क) किसान को (ख) सत्य

(ग) किसान को (घ) गाँव में

(ङ) कीचड़ से।

4. (क) शेष मनुष्य (ख) अधिनायक

(ग) किसान (घ) उर्वरा

(ङ) अनाज।

5. (क) सजे वेश (ख) विमल आरती

(ग) दुख का दुलार (घ) दुर्दिन के प्रहार

(ङ) नमस्कार।

6. (क) सुर, देव (ख) भूमि, धरा
(ग) सूर्य, आदित्य (घ) जाह्नवी, सुरसरि
(ङ) संसार, जग।

7. देखें पाठ सार।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) भारत भूमि मेरी जन्म भूमि है। मेरे लिए यह सबसे प्रिय है। इस धरती पर अनेक देश हैं, परंतु भारत सबसे न्यारा है। यहाँ भिन्न-भिन्न ऋतुएँ आती हैं। यहाँ भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का संगम है। इसलिए यह सबसे ही श्रेष्ठ और प्रिय है।

(ख) इस कविता में कवि ने किसानों के दुख भरे जीवन का वर्णन किया है। उनकी दयनीय अवस्था का चित्रण किया है। दुखों का आधिक्य उत्पीड़न ही होता है। एक ओर अति सुख-संपन्न लोग हैं तो दूसरी ओर निर्धन किसान हैं। मैं इस कथन से पूर्णतया सहमत हूँ।

पाठ 10. सोना हिरणी

- **पाठ उद्देश्य**–पशुओं के प्रति स्नेह भावना विकसित कराना।
- **पाठ सार**–शिकारियों की आहट से मृग भागे तो एक हिरणी भाग न सकी क्योंकि उसने कुछ समय पहले संतान को जन्म दिया था। हिरणी मर गई। लेखिका के पास उस बच्चे को एक बालिका ले आई। उसे बोतल से दूध पिलाया जाने लगा। धीरे-धीरे वह बड़ी होती गई और आँगन में कूदने-फाँदने लगी। उसका नाम सोना रखा गया। वह लेखिका के विद्यालय और छात्रावास की छात्राओं के साथ घुल-मिल गई। छात्राएँ उसके माथे पर कुमकुम लगातीं, गले

मे रिबन बाँधती, पताशे खिलातीं। भोजन के समय वह लेखिका के पास आ जाती। चावल, रोटी से अधिक उसे कच्ची सब्ज़ी अच्छी लगती। सोना का अधिक समय छात्राओं के साथ खेलने में व्यतीत होता था। सोना लेखिका के साथ खेलती, उसके ऊपर से उछलती, कभी साड़ी चबाने लगती। एक वर्ष में वह सुडौल हिरण ी बन गई। वह स्व-जाति के संसार को जानना चाहती थी। उसकी उछल-कूद कम हो गई थी। लेखिका की कुतिया ने चार बच्चे दिए। वह पिल्लों के बीच लेट जाती थी। धीरे-धीरे पिल्ले उसके साथ घुल-मिल गए। एक बार लेखिका बद्रीनाथ की लंबी यात्रा पर गई। वह लौटी तो सोना को न देखकर उसने चपरासी, चौकीदार, माली से पूछा। पता चला कि माली उसके गले में लंबी रस्सी बाँध कर मैदान में छोड़ देता था। एक दिन सोना ने लंबी ऊँची छलाँग लगाई और औंधे मुँह गिर गई। रस्सी खिंच जाने से वह मर गई। उसे गंगा में प्रवाहित कर दिया गया। लेखिका ने निश्चय किया था कि वह अब हिरण नहीं पालेगी परंतु कुछ समय के पश्चात् उनके परिचित स्वर्गीय डॉ० धीरेंद्र बसु की पौत्री सुस्मिता बसु एक हिरण दे गई। लेखिका उसे मना न कर सकी।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) उनके परिचित की पौत्री सुस्मिता बसु हिरण देने आई तो लेखिका को सोना का स्मरण हो आया।

   (ख) वन में शिकारी आए थे। सोना का कुछ समय पहले जन्म हुआ था। उसकी माँ जान बचाने के लिए भाग न सकी और मर गई। सोना को लेखिका के पास कोई बालिका ले आई।

   (ग) छात्रावास का जागरण और जलपान समाप्त होने पर सोना घास के मैदान में दूब चरती, उस पर लेटती थी।

(घ) छोटे बच्चे पंक्ति में खड़े होकर सोना-सोना पुकारते तो वह उनके ऊपर से छलाँग लगाती। बच्चे उसके साथ घंटों खेलते।

2. (क) सोना को लेखिका के पास कोई बालिका ले आई थी। तब सोना छोटी सी थी। उसे छोटे बच्चे अधिक पसंद थे क्योंकि वह उनके ऊपर से छलाँग मारकर कूदती रहती थी।

(ख) लेखिका के अन्य पालतू पशु कुतिया फ़्लोरा, बिल्ली गोधूली, कुत्ते हेमंत-बसंत थे। वे सब सोना के साथ खूब खेलते थे।

(ग) फ़्लोरा ने चार बच्चों को जन्म दिया। सोना उनके बीच लेट जाती थी। बच्चे उसके साथ हिल-मिल गए थे। फ़्लोरा को लगता उसके बच्चे सोना के संरक्षण में सुरक्षित थे।

3. (क) हिरणी (ख) भक्तिन
(ग) सोना (घ) कुत्ता
(ङ) नौकर।

4. (ख) गोधूलि
(ग) हिरण (घ) फ़्लोरा
(ङ) स्नेही, अहिंसक।

5. धनहीन, दयाहीन, बुद्धिहीन।

6. (क) ढंग, तरीका, रास्ता (ख) शिशु, बालक, लड़का
(ग) प्रेम, प्यार, प्रीति (घ) उत्साह, उमंग, जोश
(ङ) सारंग, मृग, हिरण।

7. दुकानदार, वफ़ादार, ज़मीदार, धारदार, नंबरदार।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) मनुष्य के पास बुद्धि है। वह समाज का हित-अहित समझता है। वह बुद्धि से विशाल पशुओं को वश में कर लेता है। वह मनुष्य के जीवन को सुविधाजनक बनाने के लिए नए-नए अविष्कार करता है। अन्य जीवों में ये क्षमताएँ नहीं होतीं।

(ख) पालतू जानवरों की देखभाल परिवार के सदस्यों की भाँति करनी चाहिए। उनके खान-पान और सुरक्षा का उचित प्रबंध करना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि अन्य पशु उन पर आक्रमण न कर दें। उन्हें प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

पाठ 11. सुख-दुख

- **पाठ उद्देश्य**—व्यक्ति को सुख और दुख को समान रूप में देखना चाहिए, इस विचार से अवगत कराना।
- **पाठ सार**—सुख और दुख की स्थिति मन की दुर्बलता पर निर्भर करती है। मन सुखों को अधिक चाहता है। दुखों से वह दुखी रहता है। सुख संसार में सदा नहीं रहते और दुख भी जीवन में हमेशा नहीं रहते। छाया और माया के समान दोनों का अस्तित्व होता है। छाया सदा नहीं रहती और माया भी । इसी तरह सुख-दुख आते-जाते रहते हैं। मन को चंचल कहा गया है। मन सुखों से संतुष्ट हो जाता है। परंतु क्या ये सुख आत्मा के अभावों को संतुष्ट कर सकते हैं? तुम्हें अपने सुखों पर बहुत अभिमान था। परंतु सुख के दिन, ऐश्वर्य-सपंदा के दिन क्या रह पाए? तुमने दुखों को समुद्र के समान विशाल समझा। वे भी ज़रा-से न रह पाए। चीड़ के जंगलों में हवा चलती है तो उसके पत्ते तेज़ आवाज़ें करते हैं। तुम संसार रूपी चीड़ वन के समान हो जो दुखों के आने पर कराहने

लगते हो, आहें भरने लगते हो। मैंने दुखी होकर जब-जब लोगों के आगे हाथ फैलाए तब-तब मुझे अपमानित होना पड़ा। मैंने ठोकरें खा-खाकर समझा है कि दुख का कारण कायरता है। सुख और दुख दोनों नाशवान हैं, फिर भी सुख-दुख सबके जीवन में आते हैं। इनके विषय में सोच-सोचकर चिंतित नहीं होना चाहिए कि कल क्या था और आज क्या हो गया है। अपनी सोच को बदलो, योगियों को देखो जो सुख-दुख में सदा समभाव रहकर मस्त रहते हैं। जब तक यह शरीर होता है तब तक मानसिक और शारीरिक कष्ट होते रहते हैं। सुख-दुख मन को प्रभावित करते रहते हैं। यदि तुम कमज़ोर हो तो तुम सुखों-दुखों के खरीदे हुए दास हो। तुम चाहो तो ये तुम्हारे दास बन सकते हैं। तुम इनसे अपने ज्ञान रूपी कुएँ को भरवा सकते हो। तुममें ऐसी क्षमता है। सुख और दुख के पिंजरे में बंद होकर तुम तोते के समान अपना सिर पीट रहे हो। सुख और दुख के किनारों को पार करके गंगा की पवित्र धारा-सा आनंद मिलता है। यह तुम पर निर्भर करता है कि जैसा चाहो वैसा बन जाओ। यह तुम पर निर्भर करता है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) सुख-दुख का अस्तित्व स्थायी नहीं होता। वे छाया और माया के समान आते-जाते रहते हैं।

   (ख) सुख-दुख सदा टिके नहीं रहते।

   (ग) कवि ने जब-जब दुखी होकर लोगों के समक्ष हाथ फैलाए, उसे अपमानित ही होना पड़ा।

   (घ) सुख-दुख दोनों नाशवान हैं, फिर भी ये सबके जीवन में आते हैं।

2. (क) सुख-दुख मनुष्य के साथ धूप-छाँव का खेल खेल रहे हैं। दोनों कभी आते हैं, कभी चले जाते हैं।

(ख) दुख आने पर मनुष्य सुख के दिनों को याद करता है। वह दुखों से कष्टों का अनुभव करता है। मनुष्य को समझना चाहिए कि दुख आकर हमारे धैर्य और साहस की परीक्षा लेते हैं।

(ग) सुख-दुख स्थायी नहीं होते इसलिए उन्हें आने-जाने वाले कहा गया है।

3. (क) सुख पर (ख) सागर
(ग) चीड़ के वन (घ) निरादर
(ङ) नश्वर (च) तोता

4. फैलाया–पाया, पर–सागर, दुर्बलता–कायरता, नश्वर–फ़िकर, आधि–व्याधि, घेरे–चेरे।

5. दुख भी नश्वर, यद्यपि सुख-दुख, सोच-फ़िकर में, आज घड़ी क्या है, सीमाएँ अपनी, जोगी नित।

6 देखें पाठ सार।

7. (क) अपमान (ख) नष्ट होने वाला
(ग) धन-दौलत (घ) कमज़ोरी।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) यह कथन पूर्णतया सत्य है। मानव जीवन जब सुखी होता है तो आनंदपूर्वक जीवनयापन कर रहा होता है। उसे किसी प्रकार की चिंता नहीं होती। दुखों के आते ही उसका जीवन कष्टों से भर जाता है। उसके पास जीने के साधन नहीं रहते। वह दुख सह-सहकर जीवन से ही निराश हो जाता है। यह मार्मिक स्थिति होती है।

(ख) मानव के हाथ में न सुख हैं और न दुख ही हैं। इसलिए उसे दोनों स्थितियों में संतुलन बनाए रखना चाहिए। उसे

दुखों को सहने के लिए मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए। इसी प्रकार सुखों में बह नहीं जाना चाहिए।

पाठ 12. वीर कुँअर सिंह

- **पाठ उद्देश्य**–स्वंतत्रता सेनानी वीर कुँअर सिंह के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कराना।
- **पाठ सार**–वीर कुँअर सिंह का जन्म सन् 1777 में भोजपुर ज़िले के जगदीशपुर गाँव में हुआ था। उनके पूर्वज शाहबाद के जागीरदार थे। वे बचपन से घुड़सवारी, निशानेबाज़ी और तलवारबाज़ी करते थे। सन् 1857 में मंगल पांडेय के विद्रोह ने उनमें क्रांति की भावना भर दी। उन्होंने अंग्रेज़ों को नाकों चने चबवा दिए। वे छापामार युद्ध में पारंगत थे। उन्होंने अंग्रेज़ों की जेल से भारतीय सिपाहियों को छुड़ाया और आरा पर कब्ज़ा कर लिया। इसका बदला लेने के लिए अंग्रेज़ों ने जगदीशपुर पर हमला किया और महल तथा दुर्ग को नष्ट कर दिया। कुँवर सिंह मिर्जापुर, अयोध्या, बलिया आदि अनेक स्थानों पर अंग्रेज़ों पर आक्रमण करते रहे। उन्होंने आजमगढ़ छावनी पर हमला किया और उस पर कब्ज़ा कर लिया। 22 अप्रैल 1858 को उन्होंने जगदीशपुर को छुड़ाने के लिए प्रस्थान किया। अंग्रेज़ों ने धन का लालच देकर कुछ लोगों को खरीद लिया था। उन्होंने अंग्रेज़ों को प्रस्थान की खबर दे दी। अंग्रेज़ों ने उन पर हमला किया। उनके बाएँ हाथ पर गोली लगी जिसका ज़हर फैलने लगा। उन्होंने बायाँ हाथ काटकर माँ गंगा को भेंट कर दिया। वे जगदीशपुर पहुँच गए। 80 वर्ष के वृद्ध योद्धा अधिक समय तक जी न सके। इतिहासकार गोम्स ने लिखा था कि यदि कुँअर सिंह युवा होते तो अंग्रेज़ों को 1857 में ही भारत छोड़ देना पड़ता।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) वीर कुँअर सिंह का जन्म सन् 1777 में जगदीशपुर में हुआ था। उन्हें घुड़सवारी, निशानेबाज़ी और तलवारबाज़ी का शौक था।

   (ख) कुँअर सिंह ने जगदीशपुर के जंगलों में सुरंगनुमा रास्ते बनाए थे। अंग्रेज़ सेनापतियों ने पत्र लिखकर इसकी जानकारी ब्रिटिश सरकार को दी थी।

   (ग) कुँअर सिंह छापामार युद्ध करके अंग्रेज़ों को हरा देते थे। इस तरह वे उनके लिए समस्या बन गए थे।

   (घ) गंगा नदी से जगदीशपुर आते समय अंग्रेज़ों ने उन पर हमला कर दिया। एक गोली उनके बाएँ हाथ में लगी जिसका ज़हर फैलने लगा। उन्होंने हाथ काटकर माँ गंगा को भेंट कर दिया।

2. (क) उनके बाएँ हाथ में गोली लग गई थी, जिसका ज़हर फैलने लगा तो उन्होंने हाथ काटकर गंगा को समर्पित कर दिया।

   (ख) इतिहासकार होम्स ने लिखा था कि यदि कुँअर सिंह युवा होते तो अंग्रेज़ों को भारत 1857 में ही छोड़ना पड़ता।

   (ग) वीर कुँअर सिंह ने 1857 के आंदोलन में आरा की जेल से भारतीय सिपाहियों को छुड़ाया। उन्होंने मिर्जापुर, बनारस, अयोध्या, लखनऊ, फैजाबाद, रीवा, कालपी, बांदा, गाजीपुर, सिंकदरपुर, मनियर, बलिया में घूम-घूमकर अपना रण-कौशल दिखलाया और कई बार अंग्रेज़ों को हराया।

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗
   (घ) ✗ (ङ) ✓

4. (क) वीर कुँअर सिंह
   (ख) घुड़सवारी, निशानेबाज़ी, तलवारबाज़ी
   (ग) मार्शल आर्ट
   (घ) शाहबाद, जागीरदार
   (ङ) साख।

5. (क) सभी में (ख) शाहाबाद
   (ग) कानपुर (घ) सरदार भगत सिंह
   (ङ) साहबज़ादा सिंह

6. वीर कुँअर सिंह ने भारत को अंग्रेज़ों से मुक्त कराने के लिए उन पर आक्रमण किए। उन्होंने उन्हें कई बार हराया वे सच्चे देशभक्त थे। उन्होंने अनेक स्थानों पर जाकर स्वंतत्रता प्राप्ति का वातावरण बनाया और युद्ध किए। उनमें अद्भुत शक्ति थी। वे पराक्रमी थे। उनकी इन विशेषताओं ने मुझे प्रभावित किया है।

7. (क) उन्होंने अंग्रेज़ों की जेल से भारतीय सिपाहियों को छुड़ाया।
   (ख) उन्होंने मिर्जापुर, बलिया, बांदा, गाजीपुर आदि स्थानों पर अंग्रेज़ों से युद्ध किया।
   (ग) उन्होंने आज़मगढ़ छावला पर कब्ज़ा कर लिया।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) देश को स्वंतत्र कराने के लिए वीर कुँअर सिंह ने सन् 1857 में अंग्रेज़ों पर आक्रमण किए। उन्होंने अंग्रेज़ों के छक्के छुड़ा दिए। यदि मैं कुँअर सिंह होता तो उनकी तरह वीरता से लड़कर देश को अंग्रेज़ों से मुक्त कराने के लिए युद्ध करता।

(ख) वीर कुँअर सिंह केवल वीर योद्धा ही नहीं थे उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व में अंग्रेज़ों को नाकों चने चबवा दिए

थे। उन्होंने छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देकर सैनिक तैयार किए थे। इससे पता चलता है कि उन में कुशल नेतृत्व क्षमता थी।

पाठ 13. नमन पुनीत अनल को

- **पाठ उद्देश्य**–कर्ण के जन्म और वीरता से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–यह कविता कर्ण की वीरता से संबधित है। कवि कहते हैं कि पवित्र आग जहाँ भी जलती है, उसे नमस्कार है। यह जिस मनुष्य में होती है उस मनुष्य के तेज और बल को हमारा नमन है। फूल जंगल की किसी भी पौधे की टहनी पर खिले सदा नमस्कार करने योग्य होता है। ज्ञानी लोग इसका पता नहीं लगाते कि गुणवान व्यक्ति का जन्म कहाँ हुआ या उसकी शक्ति का मूल क्या है। जो लोग ऊँच-नीच का भेद नहीं मानते वही श्रेष्ठ ज्ञानवान हैं। जिस व्यक्ति में दया का धर्म अर्थात् दया का गुण होता है, वही पूजनीय होता है। क्षत्रिय वही होता हैं जिसमें निडरता की आग दहकती है। सबसे श्रेष्ठ ब्राह्मण वह होता है जो तपस्वी होता है और जिसमें त्याग करने की भावना होती है। जिनमें तेज होता है, वीरता और बल होता है वह अपना गोत्र बताकर सम्मान प्राप्त नहीं करते। वह इतिहास के पृष्ठों पर अपनी वीरता की कहानियाँ लिख जाते हैं। कर्ण के पिता सूर्य थे। और माता कुंती थी। कुंती अविवाहित थी जब कर्ण का जन्म हुआ। कुंती ने उसे एक संदूक में बंद करके नदी में बहा दिया था। उसका पालन नदी की बहती धारा पर हुआ। उसका पालन सूत वंश में हुआ था। उसने अपनी माता का दूध भी नहीं पीया था। इसके बावजूद वह समस्त युवाओं में अद्भुत वीर निकला।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) जो व्यक्ति ऊँच और नीच के भेद को नहीं मानता, वही सबसे श्रेष्ठ ज्ञानवान होता है।

   (ख) तेजस्वी अपनी जाति या गोत्र बताकर सम्मान प्राप्त नहीं करते। वे श्रेष्ठ कार्य करके सम्मान प्राप्त करते हैं।

   (ग) कर्ण के पिता सूर्य और माता कुंती थी।

   (घ) जो तप करते हैं, जो त्याग करते है, वही श्रेष्ठ ब्राह्मण होते हैं।

2. (क) कवि के अनुसार वह ज्ञानी श्रेष्ठ होता है जो उच्च जाति या नीच जाति का भेद नहीं मानते। जिस व्यक्ति में दया और धर्म होते हैं वही पूजनीय होता है।

   (ख) कर्ण वीर धनुर्धर था। उसमें अग्नि-सा तेज था। वह निर्भीक था। वह तपस्वी, त्यागी और दयावान दानी था। अपनी वीरता के कारण उसे महारथी कहा जाता था।

   (ग) वीर अपनी वीरता के कारण इतिहास में अपना नाम अंकित करते हैं।

3. देखें पाठ सार।

4. फूल-मूल, ज्ञानी-प्राणी, आग-त्याग, ठीक-ठाक, कुमारी- पिटारी, क्षीर-वीर।

5. सूरज-सूर्य, करण-कर्ण, आग-अग्नि, पिता-पितृ, माता-मातृ।

6. सम्मान खोजते नहीं गोत्र, पाते हैं जग में प्रशस्ति, जग गलत कहे या ठीक, वीर खींच कर ही रहते हैं।

7. ऊँच और नीच, आदि और अंत, दया और धर्म, माता और पिता, तप और त्याग।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) कर्ण महादानी थे। महाभारत युद्ध के समय एक दिन प्रातः कर्ण पूजा करके दान दे रहे थे। इंद्र ने अपने पुत्र अर्जुन की रक्षा के लिए ब्राह्मण का वेश धारण किया और कर्ण के पास दान माँगने आ गए। इंद्र ने उनसे कवच और कुंडल माँग लिए। कर्ण के जन्म के साथ ही उनके शरीर पर रक्षक के रूप में कवच-कुंडल थे। कर्ण ने इंद्र की प्रार्थना स्वीकार करके उसे कवच और कुंडल दान कर दिए। इससे स्पष्ट होता है कि कर्ण महादानी थे।

(ख) सामान्य जन गुणवान व्यक्ति के जन्म, मूल और शक्ति के कारण उसका सम्मान करते हैं। विद्वान और श्रेष्ठजन ऐसा नहीं करते। वह गुण देखकर व्यक्ति का सम्मान करते हैं, उसकी जाति का पता नहीं करते।

पाठ 14. सुब्रह्मण्य भारती

◆ **पाठ उद्देश्य**–सुब्रह्मण्य भारती के जीवन और कृतित्व से परिचित कराना।

◆ **पाठ सार**–सुब्रह्मण्य भारती का जन्म 11 दिसंबर 1882 को तमिलनाडु के एट्टयपुरम में हुआ। उनकी प्रतिभा देखकर वहाँ के राजा ने उन्हें 'भारती' की उपाधि प्रदान की। बाल्यकाल में ही उनके पिता का देहांत हो गया। उनकी प्राथमिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय में हुई। उनका विवाह 1897 में चेल्लमल से हुआ। वे बनारस में उच्च शिक्षा ग्रहण करने गए और देश के स्वंतत्रता संग्राम में सक्रिय हो गए। सन् 1908 में वे पांडिचेरी में गए। वे वहाँ राष्ट्रभक्ति की कविताएँ लिखने लगे। उन्हें कारावास में रहना पड़ा। वे शिक्षक, कवि, पत्रकार और समाज सुधारक थे। उनकी चर्चित रचनाएँ हैं–'स्वदेश गीतांगल, जन्मभूमि, कुयिल् पाट्टु, कल्याण

पाटटु चुमचरितै, हिंतु तर्मम आदि। उन्होंने वंदे मातरम् गीत का तमिल में अनुवाद किया। वे हिंदी, बांग्ला, संस्कृत, तमिल, इंगलिश आदि भाषा जानते थे। उन्होंने 'इडिया, बाला भारतम्, कर्मयोगी, सूर्योदयम पत्रिकाओं का संपादन-प्रकाशन किया। उन पर भगिनी निवेदिता, स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाँधी का प्रभाव पड़ा। उनका देहांत 11 सिंतबर 1921 को मद्रास में हुआ।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) उनका जन्म 11 दिंसबर 1882 को तमिलनाडु के एट्टयपुरम में हुआ।
   (ख) उनकी रचनाएँ हैं–स्वदेश गीतांगल, जन्मभूमि, कुयिल पाट्टु, कल्याण पाट्टु, चुयचरितै, हिंतु तर्मम।
   (ग) सुबह्मण्य भारती ने 'वंदेमातरम्' का तमिल में अनुवाद किया, जिससे यह गीत दक्षिण भारत में प्रसिद्ध हो गया।
   (घ) उनके जीवन पर भगिनी निवेदिता, स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाँधी का प्रभाव पड़ा।
2. (क) सुब्रह्मण्य भारती की प्रतिभा को देखकर वहाँ के राजा ने उन्हें 'भारती' की उपाधि दी।
   (ख) सुब्रह्मण्य भारती स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे थे। इसलिए अंग्रेज़ सरकार उन्हें गिरफ़्तार करना चाहती थी।
   (ग) उन्होंने इंडिया, बाला भारतम्, कर्मयोगी, सूर्योदय पत्रिकाओं का संपादन किया।
3. (क) एट्टयपुरम (ख) सन् 1897
   (ग) गरम दल (घ) वंदेमातरम्
   (ङ) 11 सितंबर 1921

4. (क) भारती की प्रतिभा से उन्हें सम्मान मिला।
   (ख) स्वंतत्रता संग्राम में अनेक लोग पकड़े गए।
   (ग) भारती पत्रकार भी थे।
   (घ) भारती ने देशभक्ति के गीत लिखे।
   (ङ) उनकी रचनाओं का प्रभाव जनमानस पर पड़ा।

5. (क) 1898 (ख) स्वदेश गीतांगल, जन्मभूमि
   (ग) सन् 1917 (घ) पांडिचेरी।

6. अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध असहयोग आंदोलन चलाया गया। इसका नेतृत्व महात्मा गाँधी ने किया। देश को स्वतंत्र कराने के लिए भारती सक्रिय रूप से कार्य कर रहे थे। इसलिए उन्होंने इस आंदोलन में भाग लिया।

7. मेधावी, प्रतिभा, प्रारंभिक, अध्यात्म, आयोजित।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) सुब्रह्मण्य भारती ने शिक्षक के रूप में कार्य करके अपने विद्यार्थियों में देशभक्ति की भावना भरी। वे सच्चे देशभक्त थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और जेल भी गए। उन्होंने देशभक्ति के गीत लिखे और अन्य भावों की कविताओं का सृजन किया। वे महान कवि थे।

(ख) सुब्रहमण्य भारती के गीतों का प्रभाव दक्षिण भारतीयों पर पड़ा। ये गीत देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत थे। इनसे असंख्य लोग स्वंतत्रता आंदोलन में कूद पड़े।

पाठ 5. रहीम के दोहे

◆ **पाठ उद्देश्य**–रहीम के दोहों के माध्यम से नीति का ज्ञान प्रदान कराना।

◆ **पाठ सार**–रहीम कहते हैं जो दीपक की स्थिति होती है, कुपुत्र की भी वही स्थिति होती है। जब दीपक जलता है तो चारों ओर प्रकाश हो जाता है। वह जैसे-जैसे जलता रहता है तो रोशनी करता रहता है। वह बुझ जाता है तो अँधेरा हो जाता है। कुपुत्र के जन्म लेने पर सब बहुत प्रसन्न होते हैं। वह जैसे-जैसे बड़ा होता है। उसके कुकर्म बढ़ते जाते हैं। उसके बड़ा होने पर चारों ओर परिवार का नाम डूब जाता है।

रहीम कहते हैं कि अपने मन की पीड़ाओं को अपने मन में ही रखना चाहिए। इन्हें दूसरों को बताएँगे तो वे उपहास करेंगे। वे इन कष्टों-पीड़ाओं को बाँट नहीं लेंगे।

रहीम कहते हैं कि प्रेम के संबंध धागे के समान होते हैं। इन संबंधों को तोड़ना नहीं चाहिए। संबंध टूट जाने पर फिर से वैसे नहीं रहते। जैसे धागे को तोड़ने से वह फिर से जुड़ता नहीं है। यदि जुड़ भी जाता है तो उसमें गाँठ पड़ जाती है। इसी प्रकार यदि टूटे संबंधों को पुनः जोड़ते हैं तो बीच में एक दूरी बनी रहती है।

समय आने पर वृक्षों पर फल आते हैं। पतझड़ आने पर वे फल गिर जाते हैं। इसी तरह समय सदा एक-सा नहीं रहता कभी सुख आते हैं, कभी दुख आते हैं। इस सत्य को स्वीकार करना चाहिए, पछताना नहीं चाहिए।

रहीम कहते हैं कि बड़ी वस्तुओं को देखकर छोटी वस्तुओं को त्यागना नहीं चाहिए। छोटी-सी सुई जो काम कर सकती है वह काम तलवार नहीं कर सकती। कहने का भाव है कि बड़े लोगों से संपर्क हो जाने पर छोटे लोगों अर्थात् आर्थिक रूप से निर्धन लोगों से, पद में छोटे लोगों से संबंध नहीं तोड़ने नहीं तोड़ने चाहिए।

रहीम कहते हैं कि आँखों से निकले आँसू मन की पीड़ाओं को बता देते हैं। वे समझाते हैं कि जिसे घर से निकालते हैं, वह घर

के सारे भेद बाहर के लोगों पर प्रकट कर देता है।

रहीम कहते हैं कि जब तक व्यक्ति बोलता नहीं है तब तक उसके स्वभाव, योग्यता और प्रतिभा के विषय में पता नहीं चलता।

कौआ और कोयल देखने में एक जैसे लगते हैं। उनके बोलते ही उनके विषय में पता चल जाता है कि किसका स्वर मधुर है और कौन कर्कश स्वर में बोलता है। इसी प्रकार मनुष्य के बोलते ही उसके गुणों का पता चल जाता है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) दीपक और कुपुत्र की दशा एक जैसी होती है। इसलिए रहीम ने कुपुत्र की तुलना दीपक से की है।

   (ख) अपने मन की व्यथा दूसरों पर प्रकट करने से व्यक्ति उपहास का पात्र बन जाता है।

   (ग) समान दिखने वाले जब बोलते हैं तो उनके गुणों-अवगुणों का पता चल जाता है।

   (घ) हृदय जब दुखी होता है, तो हृदय की पीड़ाएँ आँसुओं के रूप में प्रकट हो जाती हैं। हृदय का दुख आँसुओं का रूप ले लेता है।

   (ङ) कई बार छोटे लोग ही हमारे काम आ जाते हैं। उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

   (च) समय सदा एक-सा नहीं रहता। इसलिए कष्ट और दुख आ जाने पर घबराना नहीं चाहिए। ये दिन सदा नहीं रहेंगे।

2. (क) धागा टूट जाता है तो उसे गाँठ बाँधकर जोड़ लिया जाता है। परंतु वह पहले जैसा नहीं रहता। इसी प्रकार प्रेम के संबंध टूट जाने पर पहले की तरह नहीं रहते।

   (ख) सुई और तलवार के उदाहरण द्वारा।

(ग) कौवे और कोयल के उदाहरण से कवि ने कोयल के समान अच्छे गुणी लोगों का महत्व दर्शाया है।

3. 'बारै' का अर्थ जलाना होता है। जैसे दीपक को जला दिया गया है। 'बढ़ै' का अर्थ बुझ जाना होता है। जैसे दीपक बुझ जाता है तो अँधेरा हो जाता है।

4. (क) व्यथा (ख) ग्रंथि
   (ग) ऋतु (घ) कार्य
   (ङ) गृह (च) अश्रु।

5. (क) दीपक, दीया, दीपदान (ख) कष्ट, पीड़ा, व्यथा
   (ग) नेत्र, चक्षु, आँख (घ) घर, आवास, निवास
   (ङ) मन, दिल, अंतर्मन

6. देखें पाठ सार।

7. रहीम ने संदेश दिया है कि छोटे से छोटे व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। कई बार संकटों में वही काम आ जाते हैं। कवि ने छोटी सी सुई का उदाहरण दिया है कि जो कार्य सुई कर सकती है, वह तलवार नहीं कर सकती।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) रहीम के दोहे आज भी प्रासंगिक हैं। एक दोहे में रहीम कहते हैं कि संकट, दुख, कष्ट आने पर घबराना नहीं चाहिए क्योंकि समय सदा एक जैसा नहीं रहता। दूसरे दोहे में रहीम समझाते हैं प्रेम-संबंधों को बनाए रखना चाहिए। यदि इन्हें तोड़ दिया जाता है तो वे पहले की तरह नहीं रहते।

(ख) मैं रहीम के कथन से सहमत हूँ। दूसरों पर अपने मन की व्यथाओं को प्रकट करने पर लोग मज़ाक उड़ा देते हैं। वे

सहायता नहीं करते। इसलिए अपनी व्यथाएँ मन में रखनी चाहिएँ।

पाठ 16. हिमालय

- **पाठ उद्देश्य**–भारत के संदर्भ में हिमालय के महत्व और संस्कृति से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–हिमालय पाँच छह करोड़ वर्ष पहले समुद्र था। धीरे-धीरे यह पर्वत ऋंखला बन गया। कश्मीर से असम तक हिमालय 2500 किमी फैला हुआ है। पुराणों में इसका वर्णन है। यहाँ कैलाश में भगवान शिव का निवास है, इसकी गुफ़ाओं में ऋषि-मुनि तपस्या करते थे। यहाँ तीर्थस्थान केदारनाथ, बद्रीनाथ हैं तो अनेक पर्यटनस्थल हैं। इसकी एवरेस्ट की चोटी विश्व में सबसे-ऊँची है तो काराकोरम, सागरमाथा, धौलागिरी और कंचनजंगा शिखर भी हैं। हिमालय मानसून की हवाएँ रोककर उत्तर भारत में वर्षा कराता है। इसमें गंगा यमुना के उद्गम स्थल हैं। बर्फ़ से ढके हिमालय को देखने हज़ारों पर्यटक आते हैं। इस पर जड़ी-बूटियाँ, फलदार वृक्ष और भालू, रीछ, हिरण, याक, बंदर, गेंडा, चीता आदि पाए जाते हैं। यहाँ प्रकृति का अद्भुत सौंदर्य है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) यह भारत के उत्तर में बर्फ़ के मुकुट के समान स्थित है। इसका सौंदर्य और विशालता भारत की शान है।

   (ख) हिमालय के अधिकांश भाग बर्फ से ढके रहते हैं। इसके गगनचुंबी शिखर पर्वतारोहियों और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। बर्फ़ पर पड़ती सूर्य की किरणें इसके सौंदर्य के अद्भुत दृश्य उत्पन्न करते हैं।

(ग) हिमालय मानसूनी हवाएँ रोककर वर्षा कराता है। इससे फसलें पैदा होती हैं। इससे निकलने वाली नदियाँ के जल से सिंचाई होती है। कृषि के लिए हिमालय सबसे उपयोगी है।

(घ) हिमालय स्वयं में पूर्ण है क्योंकि यहाँ बर्फ़ीले शिखर हैं, तीर्थस्थान और पर्यटनस्थल हैं, विभिन्न जातियों के पशु-पक्षी हैं, फलदार वृक्ष और जड़ी बूटियाँ हैं।

2. (क) करोड़ों वर्ष पहले हिमालय समुद्र था। इसके किनारे अंगारलैंड और गोंड्वानालैंड भूखंड थे। धीरे-धीरे ये भूखंड निकट आते गए और कालातंर में हिमालय की पर्वत श्रृंखला में परिवर्तित हो गए।

(ख) हिमालय अंचल में केदारनाथ, बद्रीनाथ, अमरनाथ और कैलाश तीर्थस्थल हैं।

(ग) हिमालय की प्रसिद्ध चोटियाँ हैं–एवरेस्ट, काराकोरम, सागरमाथा, धौलागिरी, कंचनजंगा आदि।

3. (क) हिमालय, महत्व (ख) शिव

(ग) हिमाच्छादित (घ) श्रद्धा, पर्यटन

(ङ) एवरेस्ट।

4. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓

(घ) ✓ (ङ) ✓

5. (क) हिम किरीट (ख) समुद्र

(ग) पर्वत श्रृंखला (घ) कैलाश

(ङ) एवरेस्ट

6. (क) नगाधिराज, नगपति, पर्वतराज

(ख) सरिता, सलिला, तरनी

(ग) जाह्नवी, सुरसरि, सुरसरिता

(घ) पखेरू, विहग, पंछी

(ङ) भू, धरा, भूमि।

7. (क) केदारनाथ, ब्रदीनाथ (ख) नैनीताल, मसूरी

(ग) कंचनजंगा, सागरमाथा (ग) चीड़, देवदार

(घ) गंगा,यमुना (ङ) गेंडा, चीता

(च) अंगारलैंड, गोंड्वानालैंड।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) पर्वतराज हिमालय भारत के उत्तर में प्रहरी के समान स्थित है। यह हिमालय की दूसरी ओर से आने वाले शत्रुओं से भारत की रक्षा करता है। बर्फ़ीले पर्वत शिखरों को पार करके भारत पर आक्रमण करना कठिन है इसलिए हिमालय को भारत का प्रहरी कहा गया है।

(ख) हिमालय प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत स्थल है। इसके शिखर बर्फ़ से ढके रहते हैं। इस पर भाँति-भाँति के वृक्ष, पेड़-पौधे, जड़ी-बूटियाँ होती हैं। यहाँ अनेक प्रकार के जीव-जंतु रहते हैं। यहाँ अनेक तीर्थस्थल हैं, पर्यटनस्थल हैं। यहाँ खेलों के अनेक प्रशिक्षण-स्थल हैं।

पाठ 17. माँ कह एक कहानी

◆ **पाठ उद्देश्य**–अहिंसा और जीवों के प्रति प्रेम की भावना विकसित कराना।

◆ **पाठ सार**–यह संवादात्मक कविता है, इसमें राहुल और यशोधरा

में सिद्धार्थ के जीवन की घटना का वर्णन किया गया है। राहुल कहता है कि माँ मुझे कहानी सुनाओ। तुम मेरी नानी की बेटी हो ऐसा दासी ने बताया है। तुम लेटे-लेटे बताओ कि वह राजा था या रानी थी। यशोधरा उत्तर देती है कि तुम हठी हो, सुनो! एक दिन सुबह-सुबह तुम्हारे पिता सैर कर रहे थे। प्रातः का वातावरण सुगंधित था। भाँति-भाँति के फूल खिले हुए थे। ओसकण फूलों-पत्तों पर झिलमिला रहे थे। हवा के झोंकों से ओस की बूँदें हिल रही थीं। पक्षी कल-कल स्वर करते उड़ रहे थे। अचानक बाण से आहत एक हंस ऊपर से आकर गिर गया। तुम्हारे पिता ने उसे उठाया। हंस को नया जन्म मिल गया। इतने में शिकारी वहाँ आ गया। उसने तुम्हारे पिता से पक्षी माँगा। तुम्हारे पिता तो पक्षी के रक्षक थे। उन्होंने पक्षी नहीं दिया। तब उस पक्षियों को खाने वाला शिकारी हठ करने लगा। इस तरह दयालु और निर्दयी में बहस होने लगी। दोनों अपनी-अपनी बात पर अडिग थे। तब यह विवाद न्यायालय पहुँचा। यशोधरा रुककर पुत्र राहुल से पूछती है कि तुम्हीं बताओ, न्याय किसका पक्ष लेता है। तुम निर्भय होकर बताओ कि किसकी जय होगी? मैं तुम्हारा निर्णय सुनना चाहती हूँ। तब राहुल ने उत्तर दिया कि मुझमें ऐसी क्षमता कहाँ है कि मैं उत्तर दूँ, परंतु यदि कोई निर्दोष को मारता है तो दूसरा उसे अवश्य बचाता है। न्याय रक्षा करने वाले का पक्ष लेता है, मारने वाले का नहीं, क्योंकि न्याय दया करने वाला होता है। इस पर यशोधरा कहती है, हाँ पुत्र! न्याय दया का पक्षधर होता है। तुमने कहानी अच्छी तरह समझी है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) राहुल ने अपनी माँ से कहानी सुनाने के लिए कहा। माँ ने उत्तर दिया कि क्या मैं तुम्हारी नानी हूँ जो तुम्हें कहानी सुनाऊँ।

(ख) राहुल के पिता सिद्धार्थ सुबह सैर करने बगीचे में गए थे।

(ग) उपवन में भाँति-भाँति के फूल खिले हुए थे। फूल-पत्तों पर ओसकण झिलमिला रहे थे।

(घ) राहुल के पिता सिद्धार्थ ने घायल हंस को जैसे ही उठाया वहाँ शिकारी आ गया। वह हंस देने का हठ करने लगा।

(ङ) राहुल को न्यायसंगत लगा कि मारने वाले के स्थान पर बचाने वाले का पक्ष लेना चाहिए।

2. (क) माँ कहानी सुनाओ।

(ख) उपवन में पुष्प खिले थे।

(ग) सिद्धार्थ भ्रमण पर निकले।

(घ) न्यायालय में दोनों पक्ष पहुँचे।

(ङ) राहुल ने निर्णय सुनाया।

3. (क) नरेश, नृप, महीप (ख) जल, नीर, वारि

(ग) विहग, पंछी, पखेरू (घ) सुमन, पुष्प, कुसुम

(ङ) करूणा, अनुकंपा, कृपा।

4. (क) सरल (ख) अन्याय

(ग) पराजय (घ) भक्षक

(ङ) दयालु

5. निर्मल, निरापराध, निरादर, निर्जीव, निर्दय।

6. (क) स्त्रीलिंग (ख) पुल्लिंग

(ग) पुल्लिंग (घ) स्त्रीलिंग

(ङ) स्त्रीलिंग।

7. विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

8. हंस पर राहुल के पिता का अधिकार है क्योंकि उन्होंने हंस के प्राणों की रक्षा की थी।

9. प्राचीन समय में राजा न्याय करता था। वह प्रणाली आज से एकदम भिन्न थी।

10. इस पंक्ति का आशय है कि रक्षा करने वाले का पक्ष लेना चाहिए, मारने वाले का नहीं।

11. देखें पाठ सार।

पाठ 18. एक चोर की कहानी

- **पाठ उद्देश्य**–निर्धनता की विवशताओं से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–माघ महीने की ठंड भरी रात में भंगती के गन्ने वाले खेत को लोगों ने घेर लिया। किसी चोर के उसमें छिपने की आंशका थी। एक आदमी ने खेत में टार्च की रोशनी फेंकी और घोषणा की कि चोर इसी में छिपा है। लोगों में उसे बाहर निकालने के उपायों पर बहस होने लगी। नरायन ने खेत के आधे हिस्से में दूर-दूर तक पत्तों के ढेर लगाकर आग लगा दी। डरकर चोर खेत से निकल आया। कुछ लोगों ने उसे मारना शुरू किया। नरायन ने उससे पूछा कि चोरी का सामान कहाँ है? उसने हाथ जोड़कर खेत की ओर इशारा किया। नरायन ने उसे माल लाने के लिए कहा। चोर एक पोटली ले आया। उसने पोटली खोली। पोटली में एक गीली धोती थी, लगभग दो सेर चने और पीतल का एक लोटा था। चोर सर्दी से काँप रहा था। उसे थाने ले जाने का निर्णय हुआ। चौकीदार ने चोर को धोती के एक छोर से बाँध रखा था। उसने नरायन को धोती का छोर पकड़ाते हुए कहा कि वह दिशा मैदान होकर आता है। बाकी दो आदमी भी चले गए। नरायन ने चोर को डाँटा कि उसने सेर आधा सेर चने और लोटा चुराकर चोरों को बदनाम कर

दिया है। तुम मेरे साथ कलकत्ते चलो मैं वहाँ का नामी बदमाश हूँ। उसने चोर को भाग जाने के लिए कहा। वह नहीं भागा और चुपचाप बैठा रहा। इतने में बाकी लोग आ गए। सब थाने पहुँचे। मुंशी ने चोर से उसका नाम पूछा। वह चुप रहा। मुंशी ने चोर को मारा तो वह ज़ोर से चीखा। अचानक एक सिपाही वहाँ आया। उसने चोर को पहचान लिया और मुंशी को बताया कि वह चोर पाँच बार सज़ा पा चुका है और गूँगा है। उसका कोई नहीं है। वह घूम-घूमकर यहीं आ जाता है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) तालाब के किनारे बबूल, नीम, आम और जामुन के पेड़ थे।

   (ख) गन्ने का आधा गन्ना कट चुका था। उस पर सूखी पत्तियाँ फैली हुई थीं। कटे हुए गन्ने की ठूंठियाँ पत्तों से ढँकी थीं। आधे खेत में उगे गन्नों की फुनगियों पर सफ़ेद फूल आ गए थे।

   (ग) चोर को ढूँढ़ते हुए लोग ठाकुर बाबा के बाग में पहुँचे।

   (घ) एक आदमी ने टॉर्च की रोशनी में भगंती के खेत में कुछ हिलते देखा।

2. (क) भगंती ने कहा कि एक चोर के लिए उसके खेत को न जलाया जाए। सैंकड़ों की हानि हो जाएगी।

   (ख) भगंती के यह कहने पर कि चोर आ रहा है, चारों ओर उठने वाली आवाज़ें बंद हो गई।

   (ग) जब लोग चोर को पीटने लगे तो नरायन ने कहा कि हमने निर्णय किया था कि चोर को नहीं मारेंगे। यह हमारी शरण में आया है। इसलिए इसे मारा नहीं जाएगा।

3. (क) नरायन ने चोर से कहा।

(ख) भगंती ने नरायन से कहा।

(ग) नरायन ने बूढ़े से कहा।

(घ) नरायन ने चोर से कहा।

4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗

(घ) ✗ (ङ) ✗

5. (क) खाँख रही थी। (ख) फुफकार रहा था।

(ग) खेत की ओर (घ) दो आदमी

(ङ) महुए।

6. बलि, युधिष्ठिर, राजा, पेट, चोरी, राजा, दंड।

7. थाने में पहुँचकर मुंशी ने चोर को पीटा। वह रोने लगा था। तभी वहाँ एक सिपाही आया। चोर उसे पहचान गया। उसकी आँखों से भय, विस्मय और जड़ता के भाव गायब हो गए थे। वह निश्चिंत हो गया कि अब उसे मारा-पीटा नहीं जाएगा। वह बार-बार सिपाही को झुककर प्रणाम करने लगा।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) भूख मिटाने के लिए यदि कोई चोरी करता है तो पता चलता है कि वहाँ का राजा आम लोगों की दुर्दशा नहीं जानता, वह अयोग्य शासक है। ऐसा राजा दंड का अधिकारी होता है।

(ख) इस कहानी में व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। नरायन जैसे व्यक्तियों पर व्यंग्य किया गया है जो स्वयं चोर है और चोर को पकड़ने का कार्य करता है।

पाठ 19. अनबूझ राजा

- **पाठ उद्देश्य**–राज्य की अव्यवस्था समझाकर उस पर किए गए व्यंग्य को स्पष्ट कराना।
- **पाठ सार**–यह कविता 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नाटक का काव्य रूप है। एक बार गुरु-शिष्य एक नगर में पहुँचे। उन्हें ग्वालिन मिली, जिसने बताया कि वह अँधेर नगरी थी और उसका राजा अनबूझ था। वहाँ टके सेर सब्ज़ी मिलती थी और टके सेर खाजा मिलता था। शिष्य बहुत प्रसन्न हुआ। गुरु ने शिष्य को समझाया कि वहाँ रहना खतरे से भरा है। शिष्य ने वहीं रहने का हठ किया। गुरु वहाँ से चला गया। शिष्य बाज़ार गया वहाँ सब कुछ टके सेर मिल रहा था। वर्षा होने लगी जिससे एक दीवार गिर गई। राजा वहाँ पहुँचा। उसने संतरी से दीवार गिरने का कारण पूछा। संतरी ने बताया कि कारीगर ने इसे कमज़ोर बनाया था। मैं निर्दोष हूँ। कारीगर को बुलाया गया। उसने कहा कि भिश्ती ने गारा अधिक गीला कर दिया था। उसे दंड दिया जाए। भिश्ती को बुलाया गया। उसने कहा कि मैं जिस मशक में पानी भरता हूँ, उसका दोष हैं। मशकवाले ने आकर मंत्री को दोष दिया। मंत्री को बुलाकर उसे फाँसी पर चढ़ाने का आदेश दिया गया। जल्लाद फाँसी का फंदा लेकर आया। मंत्री दुबला-पतला था, उसके गले मे फंदा न आया। फिर मोटी गरदन वाले को लाने के लिए कहा गया। शिष्य घूम रहा था। सिपाही उसे पकड़कर ले गए। राजा ने उसे फाँसी देने का आदेश दिया। शिष्य ने कहा कि वह पहले गुरु जी के दर्शन करना चाहता हैं। गुरु जी को बुलाया गया। गुरुजी ने शिष्य के कान में कुछ कहा और दोनों झगड़ने लगे। गुरु कहने लगा कि मैं फाँसी पर चढूँगा, शिष्य कहने लगा कि मैं चढूँगा। राजा ने इसका कारण पूछा। गुरु ने यह बताया कि इस समय जो फाँसी पर चढ़ेगा वह चक्रवर्ती राजा बनेगा। सारा संसार उसके अधीन होगा। राजा ने कहा

ऐसा है तो वह फाँसी पर चढ़ेगा। मूर्ख राजा फाँसी पर चढ़कर मर गया। प्रजा खुश हो गई।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) गुरु को उस नगर में रहना खतरों से खाली न लगा इसलिए वह चला गया।
   (ख) शिष्य इतनी सस्ती वस्तुएँ खाकर मोटा-ताज़ा होना चाहता था। लालच में पड़कर वह वहीं रह गया।
   (ग) दीवार गिरने का दोषी कारीगर था।
   (घ) नगर की अव्यवस्था के कारण उसे अँधेर नगरी कहा गया है।
2. (क) इस कविता में शिष्य, राजा, संतरी, कारीगर, भिश्ती, मंत्री और राजा पर व्यंग्य किया गया है।
   (ख) उसे समझाया कि दोनों पहले फाँसी पर चढ़ने का नाटक करेंगे।
   (ग) अँधेर नगरी का राजा मूर्ख था।
3. बात सच गर यही है, गुरु का कथन, पर मैं ही टँगूँगा, चढ़ा फाँसी राजा, घर, था अनबूझ राजा, जब मरा मूर्ख राजा, घर-घर।
4. (क) मंत्री को फाँसी की सज़ा सुनाई गई।
   (ख) शीश पर टोकरी रखी थी।
   (ग) ककड़ी लेकर आओ।
   (घ) सस्ता सौदा हो गया।
   (ङ) संतरी निर्दोष था।
5. चेला–धेला नगरी–डगरी
   राजा–बाजा उड़ाओ–मोटाओ
   अकेला–अधेला भारी–सवारी।

6. संतरी, कारीगर, भिश्ती, मशकवाला, मंत्री, जल्लाद, चेला, गुरु।

7. (क) महँगा (ख) बासी

(ग) हल्का (घ) मज़बूत

(ङ) जल्दी।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) मंत्री के गले में फाँसी का फँदा नहीं आया क्योंकि उसकी गरदन पतली थी। यदि मैं राजा होता तो कमज़ोर दीवार बनाने के लिए कारीगर को दंडित करता।

(ख) गुरु ने शिष्य को कहा होगा कि राजा को मूर्ख बनाने लिए फाँसी के शुभ मुहूर्त का असत्य बोलो। उसने यही किया और सब फाँसी पर चढ़ने को उतावले हो गए।

पाठ 20. पुष्प की अभिलाषा

- **पाठ उद्देश्य**–मातृभूमि के लिए प्राण देने वालों के बलिदानों के महत्व से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–कवि पुष्प की इच्छा प्रकट करते हुए कहता है–मैं देवलोक की बालाओं के आभूषणों में गुँथना नहीं चाहता। मैं प्रेमी की माला में पिरो जाकर प्रेमिका को आकर्षित नहीं करना चाहता। हे हरि, मैं सम्राटों के शव पर नहीं डाला जाना चाहता। मेरी इच्छा नहीं है कि मैं देवताओं के सिरों पर चढ़कर अपने भाग्य पर गर्व करूँ। पुष्प कहता है कि उपवन के माली तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग पर फेंक देना जिस मार्ग से वीर मातृभूमि की रक्षा करने के लिए अपना बलिदान देने जा रहे हों।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) देवताओं के सिर पर चढ़ाए जाने पर पुष्प में स्वयं पर गर्व करने का भाव उत्पन्न होगा।

   (ख) उसने उन वीरों के चरणों में स्वयं को बिछा देने की इच्छा प्रकट करके मातृभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है।

   (ग) वह देवबालाओं के आभूषणों में गुँथना नहीं चाहता, वह प्रेमियों की मालाओं में नहीं पिरोना चाहता, वह सम्राटों के शवों पर नहीं चढ़ाया जाना चाहता, वह देवताओं के सिर पर नहीं चढ़ाया जाना चाहता।

   (ग) पुष्प वनमाली से प्रार्थना करता है कि वह उसे तोड़कर मातृभूमि की रक्षा करने वाले वीरों के मार्ग में फेंक दे।

2. (क) पुष्प वनमाली से प्रार्थना करता है कि उसे मातृभूमि की रक्षा करने जा रहे वीरों के मार्ग में फेंक दे। इससे उसकी देश प्रेम की भावना का पता चलता है।

   (ख) वीर से तात्पर्य है सैनिक।

   (ग) सुरबाला अप्सराएँ होती हैं। जिनके आभूषण बहुत सुंदर होते हैं।

3. (क) पुष्प की (ख) कुसुम
   (ग) पुष्प (घ) मातृभूमि की
   (ङ) माखनलाल चतुर्वेदी

4. (क) कुसुम, सुमन, फूल (ख) इच्छा, चाह, कामना
   (ग) परमात्मा, भगवान, प्रभु (घ) मार्ग, पथ, रास्ता
   (ङ) सिर, शीर्ष, मस्तिष्क।

5. मैं सुरबाला के गहनों में, प्रेमी-माला में, बिंध प्यारी को।

6. (क) प्रेमिका (ख) वीरांगना
(ग) सम्राज्ञी (घ) प्यारा
(ङ) मालिन (च) देवी।

7. (क) देवों के सिर पर (ख) वीर
(ग) पुष्प (घ) देश प्रेम की
(ङ) सुरबालाओं के।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) देश के लिए कार्य करके, समाज की सेवा करके और एक अच्छे नागरिक बनकर मैं अपनी देश प्रेम की भावनाएँ प्रकट करूँगा।

(ख) मैं देश के लिए तन-मन धन अपना सर्वस्व अर्पित कर सकता हूँ।

पाठ 21. रानी चेन्नम्मा

◆ **पाठ उद्देश्य**–रानी चेन्नम्मा के जीवन और कार्यों से अवगत कराना।

◆ **पाठ सार**–रानी चेन्नम्मा को उनकी वीरता और अंग्रेज़ी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए 'कर्नाटक की लक्ष्मीबाई' कहा जाता है। उनका जन्म 23 अक्टूबर 1778 को बेलगावी ज़िले के ककाती नगर में हुआ। वे कित्तूर की रानी बनीं। वे निडर, साहसी और युद्ध कला में पारंगत थीं। विवाह के कुछ समय पश्चात् उनके पति का निधन हो गया। उन्होंने सत्ता संभाली। उनके पति मल्लासारजा से हुए उनके पुत्र का सन् 1824 में देहांत हो गया। रानी चेन्नम्मा ने शिवलिंगप्पा नामक बालक को गोद ले लिया और उसे अपना उत्तरधिकारी घोषित किया। अंग्रेज़ी शासन ने इसे नहीं माना। रानी ने इसका विरोध किया और ब्रिटिश सरकार को पत्र लिखा। अग्रेंजों

ने कित्तूर पर कब्ज़ा करना चाहा। रानी ने अंग्रेज़ी सेना का डटकर मुकाबला किया। अंग्रेज़ों को बीस हज़ार अंग्रेज़ सैनिकों की भारी हानि हुई। अग्रेंज़ों ने युद्ध न करने की घोषणा की और क्षमा माँगी। रानी चेन्नम्मा ने बंदी अंग्रेज़ अधिकारियों को मुक्त कर दिया। छल-कपटी और मक्कार अंग्रेज़ों ने चैपलिन के नेतृत्व में फिर आक्रमण किया। रानी पराजित हो गईं। उन्हें बेलहोंगल किले में बंदी बनाया गया। उनका निधन 21 फरवरी 1829 को हुआ। उनकी स्मृति में प्रति वर्ष 22 से 24 अक्टूबर तक कित्तूर उत्सव मनाया जाता है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) रानी चेन्नम्मा का जन्म 23 अक्टूबर 1778 को ककाती में हुआ।
   (ख) जिस राजा का कोई पुत्र नहीं होता था अथवा उसने दत्तक पुत्र गोद लिया होता था तो उसके राज्य पर ब्रिटिश सरकार कब्ज़ा कर लेती थी। यह हड़प नीति थी।
   (ग) रानी चेन्नम्मा ने पहले युद्ध में अंग्रेज़ों को पराजित कर दिया था।
   (घ) दूसरे युद्ध में रानी चेन्नम्मा हार गईं और उन्हें बंदी बनाकर किले में रखा गया। उनकी मृत्यु उसी किले में हुई।
2. (क) रानी चेन्नम्मा कित्तूर की रानी थीं। अंग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध करने के कारण उन्हें 'कर्नाटक की लक्ष्मीबाई' कहा जाने लगा।
   (ख) अंग्रेज़ रानी के राज्य पर अधिकार करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने उनके दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी नहीं माना।
   (ग) रानी चेन्नम्मा की स्मृति में 'कित्तूर उत्सव' मनाया जाता है। यह 22 से 24 अक्टूबर तक आयोजित किया जाता है।

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓
(घ) ✓ (ङ) ✗

4. आत्मसमर्पण, नीति, हुकूमत, संग्राम, विकल्प।

5. (क) 1848 (ख) कर्नाटक की लक्ष्मीबाई
(ग) 22 से 24 अक्टुबर (घ) 21 फरवरी 1829

6. (क) अत्याचारों, नीतियों (ख) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
(ग) निडर, युद्ध कला (घ) राजा मल्लासारजा
(घ) शिवलिंगप्पा।

7. (क) वीर महिला, रानी चेन्नम्मा वीरांगना थीं।
(ख) वे स्वाभिमानिनी थीं।
(ग) उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध किया।
(घ) हड़प नीति गैर-वैधानिक थी।
(ङ) चेन्नम्मा को किले में निर्वासित जीना पड़ा।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) मैं अमृतसर के शहीद उत्सव में गया हूँ। इसे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष करने वालों की स्मृति में आयोजित किया जाता है। यह उत्सव 23 मार्च को मनाया जाता है।

(ख) रानी चेन्नम्मा वीरांगना थी। वे स्वाभिमानी थी। उन्होंने अत्याचारी सत्ता के विरुद्ध युद्ध करके अपनी वीरता का प्रदर्शन किया। वे सच्ची देशभक्त थीं। उनके इन गुणों ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

पाठ 22. मनुष्यता

◆ **पाठ उद्देश्य**–मानव सेवा सबसे बड़ा धर्म है। कविता के अनुसार इस मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना।

◆ **पाठ सार**–कवि कहते हैं कि मृत्यु से डरना नहीं चाहिए क्योंकि सबने मरना है। मरकर अपनी पहचान छोड़ जानी चाहिए। पशुओं के समान स्वार्थी नहीं होना चाहिए। उदारता की कथाएँ सब कहते हैं, माँ सरस्वती कहती हैं। उदारता को धरा मानती है, सारा संसार पूजता है। विश्व में यह भाव मरना चाहिए। रंतिदेव ने अपना भोजन दूसरों को दिया, दधीचि ने अपना अस्थि-दान किया, उशीनर क्षितीश ने अपना मांस दान किया, कर्ण ने अपने शरीर की चमड़ी दे दी। मृत देह के लिए डरना नहीं चाहिए। सबके प्रति सहानुभूति रखें, बुद्ध ने दया को अपनाया, लोग उनके समक्ष नतमस्तक हुए। परोपकार ही उदारता है। धन के अहंकार में चूर नहीं हो जाना चाहिए। यहाँ सबके स्वामी त्रिलोकीनाथ हैं। उनके हाथ विशाल हैं, वे दोनों के सहायक हैं। अधीर नहीं होना चाहिए। अंतरिक्ष में असंख्य देवता हैं। दूसरों पर अवलंबित न होकर स्वयं आगे बढ़ें। जीवित रहते हुए कलंकहीन होकर आगे बढ़ो। सबके प्राण समान हैं, वेदों का यह कथन है। बंधु को बंधु के कष्ट दूर करने चाहिएँ। ऐसा न करना अनर्थ होगा, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संकटों विघ्न-बाधाओं को पार करके बढ़ते चलो। अपनत्व बढ़ता रहे और अलगाव का भाव दूर हो जाए। समस्त पंथ समान हैं। इसे मानना चाहिए। दूसरों का कल्याण करते हुए अपना कल्याण करना यह सबसे श्रेष्ठ भावना है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) मरने के पश्चात् लोग किसी व्यक्ति को उसके श्रेष्ठ कार्यों के लिए स्मरण करते हैं तो ऐसी मृत्यु सुमृत्यु है।

   (ख) जो लोग दूसरों के काम आते हैं, उनकी कीर्ति फैलती है।

   (ग) उदार व्यक्ति संपूर्ण विश्व में आत्मीयता का भाव भर देता है।

(घ) भगवान त्रिलोकनाथ सबके नाथ हैं इसलिए संसार में कोई भी अनाथ नहीं है।

2. (क) दधीचि, कर्ण और रंतिदेव महान परोपकारी थे। उन्होंने 'मनुष्यता' के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया था। उनके जीवन से परोपकार करने का ज्ञान मिलता है।

(ख) समस्त मनुष्य उस प्रभु की संतान होने के कारण आपस में बंधु हैं। इसलिए उन्हें 'मनुष्य मात्र बंधु' कहा गया है।

(ग) 'मनुष्यता' कविता का मुख्य संदेश परोपकार करना है। प्रत्येक मनुष्य को दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

3. (क) परोपकारी मनुष्यों को (ख) ईश्वर को

(ग) राजा शिवि ने (घ) उपरोक्त सभी

(ङ) परोपकारी व्यक्ति की

4. तरे–मरे कभी–सभी
एक–भेद खड़े–बड़े
वित्त–चित्त बहा–रहा।

5. विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

6. (क) परोपकारियों का (ख)परोपकार के कारण

(ग) स्वयं के लिए जीना

(घ) संकटों-बाधाओं को पार करके

(ङ) त्रिलोकनाथ।

7. (क) क्योंकि सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं।

(ख) 'रहो न भूल के सभी मदांध तुच्छ वित्त में, सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।'

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) ईश्वर की संतान होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति समान हैं। वे अपने-अपने कर्मों का फल भोगने के कारण अलग-अलग हैं।

(ख) व्यक्ति को दूसरों के हित के लिए जीवन व्यतीत करना चाहिए। मानवता का सबसे बड़ा लक्षण परोपकार है। परोपकार करके जीना ही जीना है।